20 धरती की शान

पंडित भरत व्यास

पंडित भरत व्यासजी हिन्दी साहित्य जगत के जाने-माने गीतकार रहे हैं। आपका जन्म राजस्थान के चुरू नामक क स्बे में हुआ था। आपने कई गीत-काव्यों की रचना की है। आपकी गीत रचनाएँ हिन्दी फिल्मों में भी ली गई हैं। आपकी रचनाओं में विभिन्न मानव मूल्य प्रस्थापित हुए हैं।

प्रस्तुत गीत सन् 1958 में आई-हिन्दी फिल्म गाँव की गोरी से लिया गया है । इस गीत में मनुष्य की महत्ता को देखते हुए मनुष्य को सबसे बुद्धिमान बताया है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि और कठोर परिश्रम के बल पर जल, थल और नभ में तमाम उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मनुष्य ने अपनी शक्ति से प्रकृति को बहुत सीमा तक अपने अनुकूल ढालने में सफल हुआ है। कवि बताते हैं- मनुष्य की शक्ति के सामने कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य जो चाहे, वह प्राप्त कर सकता है। यानी कि मनुष्य ही धरती की शान है। यही भाव काव्य में अन्तर्निहित है। यही हमारी महानता का प्रमाण है।

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है॥

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे ॥1॥

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा भाल,
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है,
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे ॥2॥

धरती-सा धीर, तू है अग्नि-सा वीर,
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,
गुरु-सा मतिमान, पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे ॥3॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिमगिरि हिमालय पर्वत **ज्वाल** अग्निशिखा, लौ **शान** गौरव, ऐश्वर्य, वैभव **मुख** प्रवाह, **भृकुटी** भौंह, **काल** समय (वह सम्बन्ध सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान की प्रतीति होती है।) **मतिमान** बुद्धिमान, विचारवान **प्रलय** नाश, विनाश **आह्वान** पुकार **भाल** मस्तक, कपाल **ललाट** निज, अपना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि में सर्वाधिक महान कौन है ?

(2) आप क्या-क्या कर सकते हैं ?

(3) अन्य जीवों से मनुष्य महान कैसे है ?

(4) धरती-सा धीर किसे कहा गया है ?

(5) धरती की शान कविता के रचयिता कौन हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सविस्तार लिखिए :

(1) कविता में कवि ने किन प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है ? कैसे ?

(2) प्रस्तुत कविता में मनुष्य के प्रति किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, और उससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

(3) धरती की शान से कवि का क्या तात्पर्य है ? भाव स्पष्ट कीजिए ।

(4) मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है काव्य के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(5) धरती की शान कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) गुरु-सा मतिमान,
पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी
ऊँची उड़ान है रे ।

(2) धरती की शान,
तू भारत की संतान
तेरी मुट्ठियों में
बंद तूफान है रे

4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

भूचाल, हिमगिरि, वाणी, तूफान, अमृत, धीर, हिम्मत, नभ, निज

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अमृत, अम्बर, अमर, धीर, वीर, पाप, जीवन

6. सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को....

(अ) मोड़ दे (ब) फोड़ दे

(क) तोड़ दे (ड) जोड़ दे

(2) पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा .....

(अ) हाल (ब) भाल

(क) काल (ड) मिसाल

(3) ..... को तू जान, जरा शक्ति पहचान

(अ) निज (ब) स्वयं

(क) खुद (ड) स्व

(4) तू जो अगर हिम्मत से ..... ले

(अ) ठान (ब) जान

(क) काम (ड) पहचान

7. काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) धरती ..... महान है ।

(2) तू जो ..... उड़ान है रे।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत गीत कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धरती की शान गीत का सस्वर गान करवाइए ।

●